खरपतवार नाशी रसायन को नियंत्रित किया जा सकता है। प्रति एकड़ 800मी. लीटर श्लासोश को 320 लीटर पानी में घोल बनाकर बुआई के तुरन्त बाद छिड़काव करें या 1.0 लीटर श्वासोलिनश् नामक दवा को 320 लीटर पानी में घोलकर बुआई के पहले छिड़काव करें। खरपतवारनाशी के प्रयोग के समय मृदा में नमी का होना आवश्यक है।

सिंचाई

सोयाबीन की फसल को वैसे तो बिना सिंचाई के ही उगाया जाता है, किन्तु फूल व फलियाँ बनने के समय वर्षा न हो, तो आवश्यकतानुसार एक या दो सिंचाई देनी चाहिए।

पौधा संरक्षण

भूआ पिल्लू :– भूआ पिल्लू सोयाबीन का प्रमुख शत्रु है। इसके रोक – थाम के लिए निम्नलिखित उपाय करें।

(क) बुआई के 20–25 दिनों के बाद खेत में घुम घुम कर उजली पत्तियों के पीछे रहने वाले कीड़ों को चुनकर नष्ट कर दें।

(ख) सूडियाँ खेत में फैलने लगे तो डाइक्लोरोफश्वस 300 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

(ग) बड़े और रोयेंदार होने पर एण्डोसल्फान 400 मि.ली. या क्लोरपा–इरिफश्वस 320 मि.ली. प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। यदि आवश्यकता हो तो 15–20 दिन बाद एक छिड़काव और करें।

जीवाणु पत्ती धब्बा :– रोग / जीवाणु पत्ती धब्बा रोग से रोकथाम के लिए 100 पी.पी. एम. स्ट्रेप्टोसाईक्लिन का घोल बनाकर बीमारी के लक्षण दिखाई देते ही छिड़काव कर दें। आवश्यक हो तो 15–20 दिनों बाजद एक छिड़काव और करें।

कटनी एवं भंडारण :–

पत्तियों का रंग पीला होने पर फसल को काट देना चाहिए। कटे हुए पौधों को दो–तीन दिनों तक सुखाने के बाद डण्डे से पीटकर बीज निकाल लें। इस बात का ध्यान रहे कि बीज का छिलका न उतरे और बीज में दरार न पड़े। बीजों को 3–4 दिन अच्छी तरह सुखा कर ठंडे, सुखे तथा हवादार स्थान से भंडारण करें।

सोयाबीन के व्यंजन

(क) सोयाबीन का दाल :– सोयाबीन के बीज को रात भर पानी से भिंगोकर छिलका छुड़ा लें। छिलका रहित दाल को धुप में सुखा–कर दाल के रूप में इस्तेमाल करें।

(ख) सोयाबीन का आटा : उपरोक्त विधि से बनायी गई दाल को आटे की चक्की में पीसकर 1:10 के अनुपात में गेहूँ के आटे ये चपातियों स्वादिष्ट, शीघ्र पचनेवाली तथा पौष्टिक होती है। इसके में मिलाकर चपाती के रूप में इस्तेमाल करें। आटा से पूड़ी भी तैयार की जा सकती है।

(ग) सोयाबीन की सुजी :– दाल की मोटी दरदरी पीसकर दो या तीन साईज के छेदोंवाली चलनियों से छानकर सुजी प्राप्त की जा सकती है।

(घ) सोयाबीन का दूध :–100 ग्राम सोयाबीन को एक रात पहले पानी में भिंगो दें। सुबह 2 ग्राम खाने वाला सोडा गर्म पानी में मिलाकर उसमें सोयाबीन भिंगो दें। छिलका हटाकर महीन पीस लें। इसमें 1/2 कि. ग्रा. पानी मिला 4–5 बार उबालें। ठण्डा करके छान लें। दूध तैयार हो जाएगा। इस दूध से गाय के दूध के समान दही, पनीर व अन्य दूध के व्यंजन बनाये जा सकते हैं।

(ङ) सोयाबीन की बड़ी :– 500 ग्राम सोयाबीन को एक रात पहले पानी में भिगोकर पीस लें। स्वादानुसार नमक, मिर्च पाउडर, हींग व अजवाइन मिलाकर वड़ियों बनाये व धूप में अच्छी तरह सुखाकर रखें।

(च) इस दूध को उबालना है साथ ही इसमें नींबू का रस डाल दें जिससे कि दूध फट जाए। अभी फटे दूध को कपड़े में बांधकर अच्छे से दबाकर सारा पानी निकाल दे तथा इसे सेट होने दे कुछ घंटों में हमारा पनीर तैयार हो जाएगा। सोया पनीर को टोफू भी कहा जाता है।

लेखक

डॉ0 अनिल कुमार, वैज्ञानिक (उद्यान) प्रधान, के0वी0के0, धनबाद
डॉ0 आदर्श कुमार श्रीवास्तव, वैज्ञानिक (प्रसार शिक्षा) के0वी0के0, धनबाद
डॉ नवीन कुमार, वैज्ञानिक (पौधा संरक्षण) के0वी0के0, धनबाद
डॉ नन्दना कुमारी, वैज्ञानिक (गृह विज्ञान) के0वी0के0, धनबाद
श्री रमन कुमार श्रीवास्तव (कार्यक्रम सहायक) के0वी0के0, धनबाद
श्री संजय कुमार (प्रक्षेत्र प्रबंधक) के0वी0के0, धनबाद
श्री देव प्रकाश शुक्ला (सहायक) के0वी0के0, धनबाद

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
कृषि विज्ञान केन्द्र, धनबाद
मोबाईल नं0 : +91 9431176741

Jharkhand Printers, Balapur 7250233700

संकुल अग्रिम पंक्ति प्रत्यतक्षण तेलहन अंतर्गत
तकनीकी प्रसार पुस्तिका - 1/2025-26

सोयाबीन की उन्नत खेती

कृषि विज्ञान केन्द्र

धनबाद, बलियापुर

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची

सोयाबीन एक बहुगुणीय चमत्कारी दलहनी एवं तिलहनी फसल है । 1 इसमें 40–45 प्रतिशत प्रोटीन तथा 18–20 प्रतिशत तेल पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें अमीनो एसिड मुख्यत: लाइसिन एवं उपयुक्त मात्रा में लवण और पौष्टिक तत्व भी होते हैं। सोयाबीन से दूध दही तथा मक्खन भी बनाया जा सकता है।

रासायनिक विश्लेषण के अनुसार इसका दूध गाय के दूध के समतुल्य होता है। इसके तेल में संतृप्त वसा अम्ल कम होने कारण इसका तेल हृदय रोगियों के लिए विशेष लाभदायक है।

सोयाबीन की खेती भूमि की उर्वराशक्ति को बढ़ाती है। तेल निकालने के बाद इसकी खली में भी प्रर्याप्त मात्रा में प्रोटीन एवं खनिज तत्व रहते हैं। अत: भूमि में खाद देने और मवेशियों को खिलाने में इसका उपयोग किया जा सकता है।

झारखण्ड की टाँड़ जमीन में इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है तथा अन्य फसलों की अपेक्षा सोयाबीन की खेती कर अधिक आय प्राप्त की जा सकती है।

,फसल की अच्छी पैदावार हेतु विभिन्न विषय प्रक्रियाओं को अपना कर खेती करना आवश्यक है। जिसका विवरण इस प्रकार है–

उन्नत किस्में :

राज्य में सोयाबीन की बुआई के लिए उन्नत किस्मों का विवरण इस प्रकार से है–

1. बिरसा सोयाबीन – 1

यह किस्म 108–112 दिन में पककर 8.0–8.8 क्विटल प्रति एकड़ की औसत उपज देती है। इस किस्म के दाने काले रंग के होते हैं।

इसका पौधा बौने आकार के होते हैं और यह राइजाक्टोनिया ऐरियल ब्लाईट रोग के प्रति अवरोधी होता है।

2. जे.एस. 80–21

यह किस्म 105 से 110 दिन में पककर 10 से 12 क्विंटल / एकड़ की औसत उपज देती है। इसके बीच हल्के पीले रंग के होते हैं तथा पौधे मध्यम आकार के होते हैं जो सर्कोस्पोरा नामक पत्ती धब्बा रोग और रस्ट के प्रति अवरोधी है।

3. जे.एस. 335

यह किस्म कम समय में (98–105 दिन) में पककर 10 से 14 क्विंटल / एकड़ की औसत उपज देती है। इसके पौधे रस्ट के प्रति अवरोधी होते है और इसके बीज हल्के पीले रंग के होते हैं।

4. पंजाब – 1

यह कम समय (95–100 दिन) में पकने वाला पीला रंग का प्रभेद है, जिसकी उपज क्षमता 8–10 क्विंटल / एकड़ है। यह किस्म रस्ट के प्रति अवरोधी है।

5. ब्रैग

यह किस्म 110–115 दिन में पक कर 7.2–8.8 क्विंटल प्रति एकड़ की औसत उपज देती है। इसके बीज पीले रंग के होते हैं तथा पौधे मध्यम आकार के होते हैं। इस किस्म के पौधे सर्कोस्पोरा नामक पत्ती धब्बा रोग के प्रति अवरोधी हैं ।

भूमि का चुनाव :–

पानी के अच्छे निकास वाली हल्की दोमट मिट्टी वाली टाँड़ जमीन जिसका पी. एच. 6.5 या अधिक हो, सोयाबीन की खेती के लिए उत्तम है। पठारी क्षेत्रों की मिट्टियाँ अम्लीय है। अत: मिट्टी की अम्लीयता दूर करने के लिए चूने का महीन चूर्ण 1.2–1.6 क्विंटल ध्एकड़ की दर से बुआई के समय नालियों में डालकर मिट्टी को पैर से मिला दें।

बीज दर एवं बीजोपचार

एक एकड़ भूमि की बुआई के लिए 30–32 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बोने से पूर्व प्रति किलोग्राम बीज को 3 ग्राम थीरम या 2 ग्राम वैविस्टीन से उपचारित कर लेना चाहिए। ऐसा करने से बीज द्वारा आनेवाली बीमारियों नष्ट हो जाती है।

जिस खेत में सोयाबीन पहली बार बोई जा रही हो, वहाँ बीज को जीवाणु खाद (राईजोबियम कल्चर) से उपचारित करने पर अच्छी उपज होती है। जीवाणु खाद बिरसा कृषि विश्वविद्यालय से प्राप्त की जा सकती है। उपचारित करने के लिए एक लीटर पानी में 100 ग्राम गुड़ का घोल बनाकर राईजोबियम कल्चर प्रति एकड़ के हिसाब से मिलाइये। इस घोल को बीजों पर डालते हुए उस समय तक मिलाइये जब तक कि सभी बीजों पर घोल की परत एक समान न जम जाय फिर छाया में सुखाकर तत्काल बुआई करना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

अधिक उपज प्राप्त करने के लिए बीज बोते समय प्रति एकड़ निम्नलिखित खाद का प्रयोग करें।

कम्पोस्ट रू 3–4 बैलगाड़ी
यूरिया रू 18 किलोग्राम
सिंगल सुपर फॉस्फेट रू 200 किलोग्राम
म्यूरेट ऑफ पोटाश रू 13 किलोग्राम
खाद के साथ ही 10 किलोग्राम लिण्डेन (10 प्रतिशत) की धुल भी मिला दें। ऐसा करने से खेत में दीमक आदि कीडे नष्ट हो जाते हैं ।

बुआई

जहाँ सिंचाई की सुविधा हो, वहाँ सोयाबीन की बुआई 15 जून से 30 जून तक कर दे। जहाँ सिंचाई की सुविधा उपलब्ध न हो वहाँ वर्षा प्रारंभ होते ही बुआई करनी चाहिए कतार से कतार की दूरी 30 से 45 से.मी. रखें तथा पौधे से पौधे की दूरी 5 से 8 से.मी. रखें। बुआई के समय बीजों की गहराई 3 से 4 से.मी रखनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

खरीफ फसलों में खरपतवारों का प्रकोप अधिक रहता है। खरपतवार से उपज पर औसतन 25 से 50 प्रतिशत तक प्रभाव पड़ता है। फसल को बुआई के 45 दिन बाद तक खरपतवार सबसे अधिक नुकसान पहुँचाते हैं। अत: इस अवधि में फसल को खरपतवार से मुक्त रखना चाहिए। इसके लिए दो निराई गुड़ाई, बुआई के 25 दिन तथा 40 दिन की अवस्था पर करें।